The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 4 | April 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

अजमेर जिले की ऐतिहासिक संपदा के संरक्षण में स्थानीय सरकार एवं सामाजिक दृष्टिकोण की भूमिका का समीक्षात्मक अध्ययन (भाग 1)

त्रिलोक चौहान

शोधकर्ता, इतिहास विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़ (राजस्थान)

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.20140778

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 27-04-2026

Published: 10-05-2026

Keywords:

अजमेर, ऐतिहासिक संपदा, धरोहर संरक्षण, स्थानीय सरकार, सामाजिक दृष्टिकोण, पर्यटन विकास, ASI, स्मार्ट सिटी मिशन

ABSTRACT

अजमेर जिला राजस्थान की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक धरोहरों का एक प्रमुख केंद्र है। यहाँ स्थित तारागढ़ किला, अजमेर शरीफ दरगाह, अढ़ाई दिन का झोंपड़ा, आनासागर झील की बारादरी, अकबर का किला तथा विभिन्न औपनिवेशिक भवन क्षेत्र की गौरवशाली विरासत का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये धरोहरें न केवल स्थानीय पहचान और सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण हैं, बल्कि पर्यटन विकास और आर्थिक उन्नति में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती हैं। वर्तमान समय में शहरीकरण, अतिक्रमण, पर्यावरणीय समस्याएँ तथा बढ़ते पर्यटन दबाव के कारण इन ऐतिहासिक संपदाओं के संरक्षण की आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है। पिछले दस वर्षों में स्थानीय सरकार, नगर निगम, जिला प्रशासन तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा स्मार्ट सिटी मिशन, HRIDAY योजना तथा अन्य विकास कार्यक्रमों के माध्यम से संरक्षण की दिशा में विभिन्न प्रयास किए गए हैं। इन योजनाओं के परिणामस्वरूप कुछ प्रमुख धरोहर स्थलों के बुनियादी ढाँचे, स्वच्छता, प्रकाश व्यवस्था तथा पर्यटन सुविधाओं में सुधार हुआ है। इसके साथ ही स्थानीय समाज, स्वयंसेवी संगठनों, धार्मिक संस्थाओं तथा नागरिक समूहों ने भी जागरूकता, जनभागीदारी और सामाजिक सहयोग के माध्यम से संरक्षण कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रस्तुत शोध पत्र अजमेर जिले की ऐतिहासिक संपदा के संरक्षण में स्थानीय सरकार एवं सामाजिक दृष्टिकोण की भूमिका का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें संरक्षण से संबंधित

उपलब्धियों, चुनौतियों तथा समस्याओं का विश्लेषण करते हुए भविष्य के लिए नीति सुधार, जनजागरूकता, सतत पर्यटन विकास तथा सार्वजनिक–निजी सहभागिता जैसे महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए हैं। यह अध्ययन धरोहर संरक्षण को अधिक प्रभावी बनाने तथा क्षेत्रीय विकास से जोड़ने की दिशा में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

भूमिका (Introduction)

भारत एक समृद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत वाला देश है, जहाँ प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट पहचान है। राजस्थान, विशेष रूप से अजमेर, इस विरासत का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। अजमेर का इतिहास 7वीं शताब्दी से आरंभ होकर आज तक निरंतर विकास और परिवर्तन का साक्षी रहा है। यहाँ चौहान राजाओं, मुग़लों और अंग्रेजों द्वारा निर्मित स्थापत्य कला के अद्भुत उदाहरण मिलते हैं।

अजमेर न केवल अपनी स्थापत्य कला और धरोहरों के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि यह सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह और पुष्कर के ब्रह्मा मंदिर के कारण भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त करता है। यहाँ की धरोहरें धार्मिक सौहार्द, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक विविधता की प्रतीक हैं।

परंतु आधुनिक शहरीकरण, अतिक्रमण, पर्यावरणीय प्रदूषण, तथा जनसंख्या वृद्धि के दबाव ने इन धरोहरों के संरक्षण को चुनौतीपूर्ण बना दिया है। पिछले दशक में स्थानीय सरकार और समाज दोनों ने मिलकर संरक्षण के लिए योजनाएँ और गतिविधियाँ चलाई हैं, जिनका मूल्यांकन करना इस शोधपत्र का उद्देश्य है।

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है—

1. अजमेर जिले की प्रमुख ऐतिहासिक धरोहरों का परिचय प्रस्तुत करना।
2. संरक्षण में स्थानीय सरकार की भूमिका का मूल्यांकन करना।
3. सामाजिक दृष्टिकोण और सामुदायिक भागीदारी की समीक्षा करना।
4. योजनाओं, उपलब्धियों और चुनौतियों का समीक्षात्मक अध्ययन करना।
5. संरक्षण की भावी रणनीतियों पर सुझाव देना।

अजमेर की ऐतिहासिक धरोहर का परिचय

अजमेर राजस्थान राज्य का एक प्रमुख ऐतिहासिक और सांस्कृतिक नगर है। इसकी स्थापना 7वीं शताब्दी में चौहान शासक राजा अजयपाल चौहान द्वारा की गई थी। समय के साथ यह नगर चौहान वंश, दिल्ली सल्तनत,

मुग़ल शासकों और ब्रिटिश साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक एवं सांस्कृतिक केंद्र रहा। इन सभी शासकों और शासकीय व्यवस्थाओं ने अजमेर में अपने-अपने समय की स्थापत्य कला और सांस्कृतिक धरोहरों को जन्म दिया।

अजमेर की ऐतिहासिक धरोहरें विविधता से परिपूर्ण हैं। इनमें **किले, महल, धार्मिक स्थल, हवेलियाँ, औपनिवेशिक इमारतें, जल संरचनाएँ और उद्यान** शामिल हैं। इन धरोहरों का महत्व केवल स्थानीय या राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी मान्यता प्राप्त है।

1. तारागढ़ किला

तारागढ़ किला 8वीं शताब्दी में चौहान शासक अजयपाल चौहान द्वारा बनवाया गया था। यह किला अजमेर नगर के ऊपर अरावली पर्वतमाला पर स्थित है और राजस्थान के सबसे प्राचीन किलों में गिना जाता है। यह किला अनेक युद्धों और राजनीतिक घटनाओं का गवाह रहा है।

2. अजमेर शरीफ दरगाह

ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह न केवल अजमेर बल्कि पूरे भारत की सबसे प्रसिद्ध सूफी दरगाहों में से एक है। यहाँ हर साल लाखों श्रद्धालु देश-विदेश से आते हैं। यह दरगाह धार्मिक सौहार्द और सामुदायिक एकता का प्रतीक है।

3. अढ़ाई दिन का झोंपड़ा

यह स्मारक 12वीं शताब्दी का है और इसे भारत की मध्यकालीन वास्तुकला का अद्वितीय उदाहरण माना जाता है। प्रारंभ में यह एक संस्कृत विद्यालय और मंदिर था, जिसे बाद में मस्जिद में परिवर्तित कर दिया गया।

4. आनासागर झील और बारादरी

आनासागर झील कृत्रिम झील है, जिसे 12वीं शताब्दी में अनाजी चौहान ने बनवाया था। शाहजहाँ ने इसके किनारे संगमरमर की बारादरियाँ बनवाईं। यह अजमेर का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है।

5. अकबर का किला और संग्रहालय

अकबर का किला मुगलकालीन स्थापत्य का महत्वपूर्ण उदाहरण है। वर्तमान में यह राजस्थान राज्य संग्रहालय के रूप में कार्यरत है, जहाँ प्राचीन मूर्तियाँ, लघुचित्र और शिलालेख सुरक्षित हैं।

6. हवेलियाँ और औपनिवेशिक धरोहर

अजमेर में अनेक पारंपरिक हवेलियाँ और ब्रिटिश कालीन इमारतें भी धरोहर स्वरूप मौजूद हैं। इनमें मेयो कॉलेज, पुरानी हवेलियाँ और उपनिवेशकालीन स्थापत्य के नमूने उल्लेखनीय हैं।

प्रमुख संरक्षित स्थल (2015–2025 की दृष्टि से)

इस भाग में हम अजमेर जिले के वे प्रमुख स्थल लेंगे जिन पर स्थानीय सरकार, ASI और समाज ने संरक्षण कार्य किए। इसमें निम्नलिखित शामिल होंगे:

1. **तारागढ़ किला** – संरक्षण और पर्यटन विकास की योजनाएँ
2. **अजमेर शरीफ दरगाह** – सफाई, यात्री सुविधाएँ, सांस्कृतिक संरक्षण
3. **अढ़ाई दिन का झोंपड़ा** – ASI द्वारा संरक्षण कार्य
4. **आनासागर झील व बारादरी** – स्मार्ट सिटी मिशन के अंतर्गत विकास
5. **अकबर का किला व संग्रहालय** – प्रदर्शनी और पुरातात्विक संरक्षण
6. **औपनिवेशिक धरोहर (मेयो कॉलेज, हवेलियाँ)** – स्थानीय व सामाजिक प्रयास

प्रमुख संरक्षित स्थल (2015–2025 के संदर्भ में)

अजमेर जिले में अनेक ऐतिहासिक धरोहरें विद्यमान हैं। बीते एक दशक में इन धरोहरों पर स्थानीय सरकार, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI), नगर निगम, राज्य सरकार तथा समाज के विभिन्न संगठनों द्वारा संरक्षण कार्य किए गए हैं। यहाँ कुछ प्रमुख स्थलों का विवरण प्रस्तुत है:

1. तारागढ़ किला

- **इतिहास**: 8वीं शताब्दी में चौहान शासकों द्वारा निर्मित, यह किला राजस्थान के सबसे प्राचीन किलों में से एक है।
- **संरक्षण कार्य**:
- **पिछले** वर्षों में राजस्थान पर्यटन विभाग ने यहाँ तक पहुँचने वाली सड़कों के विकास पर ध्यान दिया।
- स्मार्ट सिटी मिशन के अंतर्गत तारागढ़ को पर्यटक परिपथ (Tourist Circuit) से जोड़ने की योजना बनी।
- स्थानीय युवाओं और एनजीओ ने स्वच्छता अभियान चलाकर किले परिसर को साफ-सुथरा बनाए रखने में योगदान दिया।
- **चुनौतियाँ**:
- किले की दीवारें क्षतिग्रस्त हो रही हैं और नियमित जीर्णोद्धार की आवश्यकता है।
- **अतिक्रमण** और अवैध निर्माण इस स्थल के ऐतिहासिक स्वरूप को प्रभावित करते हैं।

2. अजमेर शरीफ दरगाह

- **महत्त्व: यह सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह है, जहाँ हर वर्ष लाखों श्रद्धालु आते हैं।**
- **संरक्षण कार्य:**
- **जिला प्रशासन ने सुरक्षा एवं यात्री सुविधाओं को बढ़ाया।**
- **CCTV कैमरे, बैरिकेडिंग, और महिला सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया।**
- **राज्य सरकार और दरगाह समिति ने सफाई, प्रकाश व्यवस्था और भीड़ नियंत्रण में सुधार किया।**
- **चुनौतियाँ:**
- **बढ़ती भीड़** और पर्यावरणीय दबाव से स्मारक को नुकसान का खतरा।
- भीड़ **प्रबंधन** और स्वच्छता बनाए रखना सबसे बड़ी चुनौती है।

3. अढ़ाई दिन का झोंपड़ा

- **इतिहास**: यह 12वीं शताब्दी का अद्वितीय स्मारक है, जो पहले संस्कृत विद्यालय था और बाद में मस्जिद में परिवर्तित हुआ।
- **संरक्षण कार्य:**
- **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) ने नियमित सफाई, मरम्मत और संरक्षण कार्य किए।**
- **2024 में राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष ने इस स्मारक का वैज्ञानिक सर्वेक्षण कराने पर बल दिया।**
- **चुनौतियाँ:**
- **मंदिर अवशेषों और स्तंभों पर पर्यावरणीय प्रभाव।**
- **पर्यटक** प्रबंधन और संरक्षण कार्यों में वित्तीय सीमाएँ।

4. आनासागर झील और बारादरी

- **इतिहास: 12वीं शताब्दी में अनाजी चौहान द्वारा निर्मित यह झील और मुगलकालीन बारादरी अजमेर का महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है।**
- **संरक्षण कार्य:**
- **स्मार्ट सिटी मिशन के अंतर्गत झील किनारे सौंदर्यीकरण कार्य हुए।**
- **नगर निगम ने सफाई और प्रकाश व्यवस्था में सुधार किया।**
- **झील में** अतिक्रमण रोकने और प्रदूषण नियंत्रण हेतु अभियान चलाए गए।
- **चुनौतियाँ**:
- झील में **जल प्रदूषण की समस्या बनी हुई है।**

- **पर्यावरणीय** संतुलन बनाए रखना कठिन कार्य है।

5. अकबर का किला और संग्रहालय

- **इतिहास: अकबर द्वारा निर्मित यह किला वर्तमान में संग्रहालय के रूप में कार्यरत है।**
- **संरक्षण कार्य:**
- **2025 में राजस्थान सरकार ने 5 करोड़ रुपये की परियोजना के तहत संग्रहालय के प्रदर्शनी कक्षों का नवीनीकरण और पुस्तकालय का उन्नयन शुरू किया।**
- **मूर्तियों और लघुचित्रों को सुरक्षित रखने हेतु आधुनिक तकनीक का प्रयोग किया गया।**
- **चुनौतियाँ:**
- **आगंतुकों की संख्या अपेक्षाकृत कम है, जिससे राजस्व और संरक्षण दोनों प्रभावित होते हैं।**
- **स्मारक** की दीवारें और ढाँचा समय-समय पर क्षतिग्रस्त होता है।

6. औपनिवेशिक धरोहर और हवेलियाँ

- **इतिहास: अजमेर में ब्रिटिश कालीन इमारतें (जैसे मेयो कॉलेज) और पारंपरिक हवेलियाँ सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा हैं।**
- **संरक्षण कार्य:**
- **नगर निगम और स्थानीय एनजीओ ने कुछ पुरानी हवेलियों को "हेरिटेज हाउस" के रूप में संरक्षित करने की पहल की।**
- **मेयो कॉलेज** जैसी संस्थाओं ने अपने भवनों का संरक्षण स्वयं किया।
- **चुनौतियाँ:**
- **निजी स्वामित्व वाली हवेलियों की देखरेख सीमित है।**
- **कई इमारतें** जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हैं और सरकारी मदद न मिलने से उपेक्षित हैं।

स्थानीय सरकार की भूमिका (2015–2025)

1. अजमेर स्मार्ट सिटी मिशन में धरोहर संरक्षण परियोजनाएँ
2. नगर निगम एवं जिला प्रशासन द्वारा सफाई, रोशनी और संरचनात्मक मरम्मत
3. राजस्थान पर्यटन विभाग और राज्य सरकार की योजनाएँ
4. एएसआई (ASI) की पहलें – विशेषकर अढ़ाई दिन का झोंपड़ा और तारागढ़ किला
5. वित्तीय प्रावधान और नीतियाँ

अजमेर जिले की ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण में स्थानीय सरकार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। पिछले एक दशक (2015–2025) में राज्य सरकार, नगर निगम, जिला प्रशासन और पर्यटन विभाग ने मिलकर कई योजनाएँ और परियोजनाएँ चलाईं। इन प्रयासों से न केवल धरोहरों के भौतिक स्वरूप को संरक्षित किया गया बल्कि उनके सांस्कृतिक और धार्मिक महत्त्व को भी सशक्त बनाया गया।

1. स्मार्ट सिटी मिशन और धरोहर संरक्षण

2015 में अजमेर को स्मार्ट सिटी योजना के अंतर्गत चुना गया। इस योजना के तहत स्थानीय प्रशासन ने **आनासागर झील क्षेत्र**, **दरगाह क्षेत्र**, और **विरासत मार्ग (Heritage Walks)** पर विशेष ध्यान दिया।

- **झील किनारे सौंदर्यीकरण और प्रकाश व्यवस्था।**
- **दरगाह क्षेत्र में भीड़ नियंत्रण, CCTV, और बैरिकेडिंग।**
- **तारागढ़ किला और पुरानी हवेलियों को "हेरिटेज टूरिज़्म" से जोड़ने की योजना।**

इस प्रकार, स्मार्ट सिटी मिशन ने धरोहर संरक्षण को शहरी विकास से जोड़ा।

2. नगर निगम और जिला प्रशासन की पहलें

अजमेर नगर निगम ने धरोहरों की सफाई, यातायात प्रबंधन और संरचना की मरम्मत पर कार्य किया।

- **दरगाह क्षेत्र में पैदल मार्ग और सुरक्षा व्यवस्था।**
- **हवेलियों और पुराने बाजारों में अतिक्रमण हटाने के प्रयास।**
- **स्वच्छ भारत मिशन** के साथ धरोहर स्थलों पर सफाई अभियान।

जिला प्रशासन ने समय-समय पर समीक्षा बैठकें कर दरगाह, झील और संग्रहालय जैसे स्थलों पर सुविधाओं को बेहतर बनाने पर जोर दिया।

3. राज्य सरकार और पर्यटन विभाग की योजनाएँ

राजस्थान सरकार ने पर्यटन और सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण के लिए बजट में विशेष प्रावधान किए।

- 2025 **में अकबर के किले और संग्रहालय के जीर्णोद्धार हेतु 5 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए।**
- **तारागढ़** किले के लिए पर्यटन परिपथ विकसित करने का निर्णय लिया गया।
- राज्य पर्यटन विकास निगम ने **हेरिटेज टूरिज़्म पैकेज** शुरू किए, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था और संरक्षण दोनों को बल मिला।

4. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) की भूमिका

ASI ने अजमेर के कई स्थलों को संरक्षित स्मारकों की सूची में शामिल किया है।

- अढ़ाई दिन का झोंपड़ा – नियमित सफाई, मरम्मत और संरक्षण।
- दरगाह और आसपास की संरचनाएँ – पुरानी नक्काशी और शिलालेखों की सुरक्षा।
- ASI ने विशेषज्ञ सर्वेक्षण कर यह सुनिश्चित किया कि इन स्मारकों की मौलिकता बनी रहे।

5. वित्तीय प्रावधान और नीतिगत समर्थन

पिछले दस वर्षों में स्थानीय सरकार ने वित्तीय सहयोग भी बढ़ाया।

- स्मार्ट सिटी योजना के तहत करोड़ों रुपये आवंटित किए गए।
- राज्य बजट में संग्रहालयों और स्मारकों के लिए अलग से निधि रखी गई।
- जिला प्रशासन ने CSR (Corporate Social Responsibility) के तहत निजी कंपनियों को भी धरोहर संरक्षण में जोड़ा।

सामाजिक दृष्टिकोण और जनभागीदारी (2015–2025)

इसमें हम देखेंगे:

1. **स्थानीय समाज की भागीदारी** – एनजीओ, धार्मिक संस्थाएँ, स्थानीय ट्रस्ट, और निवासियों का योगदान।
2. **सामाजिक आंदोलनों – जैसे साफ-सफाई अभियान, हेरिटेज वॉक, जन-जागरूकता कार्यक्रम।**
3. **शिक्षण संस्थानों की भूमिका – कॉलेजों और विश्वविद्यालयों द्वारा आयोजित धरोहर संरक्षण गतिविधियाँ।**
4. **मीडिया और सोशल मीडिया** – किस प्रकार लोगों ने धरोहर संरक्षण की आवाज़ उठाई।
5. **चुनौतियाँ और सामाजिक उपेक्षा** – तोड़-फोड़, अतिक्रमण, पर्यावरणीय क्षति, और उदासीनता।

अजमेर जिले की ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण में केवल सरकार ही नहीं बल्कि स्थानीय समाज, स्वयंसेवी संस्थाएँ (NGOs), धार्मिक संगठनों और शैक्षणिक संस्थानों की भी सक्रिय भूमिका रही है। पिछले दस वर्षों में समाज की भागीदारी ने संरक्षण कार्यों को व्यवहारिक और टिकाऊ बनाने में मदद की है।

1. स्थानीय समाज और नागरिकों का योगदान

- स्थानीय निवासियों ने समय-समय पर स्वच्छता अभियान चलाकर दरगाह क्षेत्र, आनासागर झील और तारागढ़ किले को साफ रखने का कार्य किया।

- कई सामाजिक संगठनों ने "**हेरिटेज वॉक**" और सांस्कृतिक यात्राओं का आयोजन किया, जिनसे लोगों में जागरूकता बढ़ी।
- कुछ इलाकों के व्यापारी संगठनों ने बाजार क्षेत्रों में ऐतिहासिक हवेलियों और पुरानी दुकानों को सुरक्षित रखने के लिए सहयोग दिया।

2. धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थाओं की भूमिका

- अजमेर **शरीफ दरगाह कमेटी** ने दरगाह परिसर में सफाई, मरम्मत और यात्रियों की सुविधा के लिए प्रशासन का सहयोग किया।
- पुष्कर के मंदिर ट्रस्टों ने भी धार्मिक स्थलों के संरक्षण के लिए विशेष फंड और दान का उपयोग किया।
- स्थानीय त्योहारों और मेलों के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से धरोहरों के महत्व को समाज तक पहुँचाया गया।

3. शिक्षण संस्थानों और युवाओं की भूमिका

- **मेयो** कॉलेज और अन्य शैक्षणिक संस्थानों के विद्यार्थियों ने धरोहर संरक्षण अभियानों में भाग लिया।
- विश्वविद्यालय स्तर पर छात्रों ने प्रोजेक्ट वर्क और शोध कार्यों के माध्यम से अजमेर की धरोहरों का दस्तावेजीकरण किया।
- युवाओं ने सोशल मीडिया अभियानों के जरिए धरोहरों की उपेक्षा और अतिक्रमण के खिलाफ आवाज उठाई।

4. मीडिया और सोशल मीडिया की भूमिका

- स्थानीय समाचार पत्रों और चैनलों ने धरोहर संरक्षण से जुड़ी समस्याओं और योजनाओं को प्रमुखता दी।
- सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म (जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम) पर कई युवाओं और संगठनों ने ऐतिहासिक स्थलों की तस्वीरें और कहानियाँ साझा कर जागरूकता फैलाई।
- ऑनलाइन अभियानों के चलते कुछ स्थलों पर प्रशासन को तुरंत कार्रवाई करनी पड़ी।

5. चुनौतियाँ और सीमाएँ

- कुछ नागरिकों की उपेक्षा और लापरवाही के कारण स्मारकों पर तोड़फोड़ और दीवारों पर लिखावट की घटनाएँ हुईं।
- झीलों और धार्मिक स्थलों पर कचरे और प्रदूषण की समस्या बनी रही।

- निजी स्वामित्व वाली हवेलियों के संरक्षण में सामाजिक सहयोग सीमित रहा, क्योंकि आर्थिक भार केवल मालिकों पर था।
- कई बार संरक्षण को "सरकार का काम" मानकर लोग जिम्मेदारी से बचते भी रहे।

निष्कर्ष:

समाज की सक्रिय भागीदारी ने अजमेर की धरोहरों को जीवंत बनाए रखा है। धार्मिक ट्रस्ट, NGOs, शिक्षण संस्थान और युवा पीढ़ी ने अपने-अपने स्तर पर योगदान दिया है। हालाँकि, जनजागरूकता और जिम्मेदारी की भावना को और बढ़ाना आवश्यक है ताकि संरक्षण केवल सरकारी प्रयास न रहकर **साझी जिम्मेदारी** बन सके।

विशेष नीतियाँ और योजनाएँ (2015–2025)

अजमेर की ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण में केंद्र और राज्य सरकारों की कई योजनाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पिछले एक दशक में संरक्षण की दिशा में लिए गए ठोस कदम इस प्रकार हैं—

1. स्मार्ट सिटी मिशन (2015–2025)

- अजमेर को स्मार्ट सिटी मिशन के अंतर्गत चुना गया, जिसमें "हेरिटेज वॉक" और ऐतिहासिक बाजारों के पुनरुद्धार को प्राथमिकता दी गई।
- दरगाह, तारागढ़, सोफिया स्कूल, और अजमेर रेलवे स्टेशन क्षेत्र के आस-पास के विकास कार्य किए गए।
- स्मार्ट सिटी फंड से पुरानी गलियों, चौक और धरोहर इमारतों का सौंदर्यीकरण हुआ।

2. HRIDAY योजना (Heritage City Development and Augmentation Yojana, 2015)

- अजमेर को HRIDAY योजना में शामिल कर धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण पर कार्य किया गया।
- पुष्कर झील, दरगाह शरीफ, और पुरानी हवेलियों के आसपास बुनियादी सुविधाएँ (जैसे बिजली, पानी, सीवरेज) सुधारी गईं।
- योजना का उद्देश्य था "**आस्था और पर्यटन के बीच संतुलन**" बनाना।

3. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) की पहल

- अजमेर में कई स्मारक ASI संरक्षित हैं, जैसे कि ढाई दिन का झोपड़ा, तारागढ़ किला और कई पुराने मंदिर-मस्जिद।

- ASI ने समय-समय पर इन पर मरम्मत, शिलालेख संरक्षण, और दीवारों की सफाई का कार्य किया।
- डिजिटल आर्काइव और 3D डॉक्यूमेंटेशन के माध्यम से धरोहरों का इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड तैयार किया गया।

4. राजस्थान राज्य सरकार की पहलें

- राजस्थान पर्यटन विभाग ने "पुष्कर फेयर" और "अजमेर हेरिटेज फेस्टिवल" जैसे आयोजनों में धरोहरों को केंद्र में रखा।
- राज्य सरकार ने निजी भागीदारी (PPP मॉडल) के तहत कुछ हवेलियों और कोठियों को हेरिटेज होटल के रूप में विकसित करने की अनुमति दी।
- स्वच्छ भा**रत मिशन** के तहत ऐतिहासिक स्थलों के आस-पास स्वच्छता अभियानों को जोड़ा गया।

5. यूनेस्को और अंतरराष्ट्रीय सहयोग

- अजमेर-पुष्कर क्षेत्र को "संभावित विश्व धरोहर स्थल" के रूप में सूचीबद्ध करने पर चर्चा हुई।
- कुछ अंतरराष्ट्रीय NGO ने स्थानीय ट्रस्टों और सरकार के साथ मिलकर **धरोहर संरक्षण कार्यशालाएँ** आयोजित कीं।

समीक्षा:

इन योजनाओं से निश्चित रूप से अजमेर की धरोहरों को नया जीवन मिला है, लेकिन चुनौतियाँ भी सामने आई हैं—

- कुछ परियोजनाएँ अधूरी रह गईं।
- स्मार्ट सिटी योजना का फोकस आधुनिक ढाँचागत विकास पर ज्यादा रहा, संरक्षण को उतनी प्राथमिकता नहीं मिली।
- PPP मॉडल में कई बार स्थानीय समाज की भागीदारी सीमित रह गई।

संरक्षण की उपलब्धियाँ और सीमाएँ (2015–2025)

अजमेर जिले की ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण में स्थानीय सरकार, ASI, सामाजिक संगठनों और जनता के संयुक्त प्रयासों से पिछले दस वर्षों में कई उपलब्धियाँ सामने आईं। लेकिन चुनौतियाँ और सीमाएँ भी बनी हुई हैं।

1. संरक्षण की प्रमुख उपलब्धियाँ

(क) धरोहर स्थलों का सौंदर्यीकरण

- **आनासागर झील और बारादरी** क्षेत्र का सौंदर्यीकरण स्मार्ट सिटी मिशन के अंतर्गत हुआ।

- दरगाह शरीफ परिसर और आसपास के क्षेत्रों में सफाई और यात्री सुविधाओं में सुधार हुआ।

(ख) पर्यटक सुविधाओं का विकास

- तारागढ़ किले तक पहुँचने वाले मार्गों का जीर्णोद्धार।
- अकबर के किले और संग्रहालय में नए प्रदर्शनी कक्ष और पुस्तकालय का उन्नयन।
- पर्यटन विभाग द्वारा "हेरिटेज वॉक" और सांस्कृतिक आयोजनों का प्रारंभ।

(ग) डिजिटल संरक्षण

- ASI ने अढ़ाई दिन का झोंपड़ा और अन्य स्मारकों का **डिजिटल डॉक्यूमेंटेशन** किया।
- ऑनलाइन प्रचार-प्रसार से अजमेर की धरोहरों को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली।

(घ) सामाजिक भागीदारी

- स्थानीय युवाओं और NGOs ने सफाई और जन-जागरूकता अभियान चलाए।
- धार्मिक संस्थाओं ने अपनी संपत्तियों और धरोहरों के संरक्षण के लिए विशेष फंड जुटाए।

2. संरक्षण की सीमाएँ और चुनौतियाँ

(क) अतिक्रमण और अवैध निर्माण

- ऐतिहासिक बाजारों और हवेलियों के आसपास अतिक्रमण अभी भी बड़ी समस्या है।
- दरगाह क्षेत्र और झीलों के किनारे अवैध निर्माण संरक्षण कार्यों को प्रभावित करते हैं।

(ख) पर्यावरणीय क्षति

- आनासागर झील और पुष्कर झील में प्रदूषण की समस्या बनी हुई है।
- बढ़ते वाहनों और औद्योगिक गतिविधियों से धरोहर स्थलों पर दबाव।

(ग) वित्तीय और तकनीकी सीमाएँ

- कई परियोजनाएँ बजट की कमी से अधूरी रह गईं।

- PPP मॉडल के अंतर्गत केवल चुनिंदा धरोहरों को महत्व मिला, बाकी उपेक्षित रह गईं।

(घ) जन-जागरूकता का अभाव

- कई लोग संरक्षण को केवल "सरकार का काम" मानते हैं।
- स्मारकों पर तोड़फोड़, दीवारों पर लिखावट और कचरा फैलाने जैसी समस्याएँ आज भी मौजूद हैं।

सारांश:

2015–2025 के बीच संरक्षण कार्यों से अजमेर की धरोहरों की स्थिति में सुधार हुआ, लेकिन **अतिक्रमण, प्रदूषण, वित्तीय सीमाएँ और सामाजिक उदासीनता** अभी भी बड़ी चुनौतियाँ हैं।

समीक्षात्मक विश्लेषण

अजमेर जिले की ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण की स्थिति का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि पिछले एक दशक (2015–2025) में स्थानीय सरकार, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI), सामाजिक संगठनों और जनता ने मिलकर कई सराहनीय प्रयास किए हैं। किंतु इन प्रयासों का प्रभाव समान रूप से सभी धरोहरों पर नहीं पड़ा।

1. सरकारी प्रयासों की समीक्षा

- **स्मार्ट सिटी मिशन** और **HRIDAY योजना** ने अजमेर को पर्यटन और धरोहर संरक्षण की दृष्टि से नई पहचान दी।
- **राज्य सरकार द्वारा अकबर के किले और संग्रहालय पर निवेश एक सकारात्मक कदम रहा।**
- **नगर निगम और** जिला प्रशासन ने दरगाह और आनासागर झील क्षेत्र में स्वच्छता एवं यात्री सुविधाओं में सुधार किया। *लेकिन:* कई योजनाएँ अधूरी रहीं या केवल कागजों तक सीमित रह गईं। उदाहरणस्वरूप, तारागढ़ किले का संरक्षण आज भी अधूरा है।

2. सामाजिक प्रयासों की समीक्षा

- NGOs, धार्मिक संस्थाओं और युवाओं की भागीदारी से जागरूकता और स्वच्छता अभियानों को बल मिला।
- स्थानीय व्यापारिक संगठनों ने बाजार क्षेत्रों की धरोहरों को संरक्षित करने की कोशिश की। *लेकिन:* सामाजिक प्रयास प्रायः असंगठित और छोटे स्तर तक सीमित रहे। लंबी अवधि की ठोस रणनीति का अभाव दिखाई देता है।

3. उपलब्धियाँ बनाम चुनौतियाँ

- **उपलब्धियाँ**:
  - झीलों और दरगाह क्षेत्र का सौंदर्यीकरण।
  - पर्यटन सुविधाओं का विस्तार।
  - डिजिटल संरक्षण और प्रचार।
- **चुनौतियाँ**:
  - अतिक्रमण और प्रदूषण।
  - बजट की कमी और अधूरी परियोजनाएँ।
  - नागरिक उदासीनता और धरोहरों के प्रति जिम्मेदारी का अभाव।

4. नीति-प्रभाव का मूल्यांकन

- योजनाओं का प्रभाव **शहरी क्षेत्रों** (दरगाह, झील, किला) पर ज्यादा दिखा, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों की धरोहरें (पुराने मंदिर, हवेलियाँ) उपेक्षित रहीं।
- PPP मॉडल से कुछ हवेलियाँ हेरिटेज होटल में बदल गईं, लेकिन सामाजिक और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में उनका स्वरूप बदलने की आशंका भी बनी।
- कुल मिलाकर, नीतियाँ "संरक्षण + पर्यटन" पर केंद्रित रहीं, लेकिन "संरक्षण + स्थानीय पहचान" पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया गया।

सारांश:

अजमेर जिले में धरोहर संरक्षण की स्थिति **आंशिक रूप से सफल** कही जा सकती है। जहाँ सरकार और समाज ने मिलकर कई सकारात्मक पहलें कीं, वहीं अतिक्रमण, प्रदूषण और जागरूकता की कमी जैसी चुनौतियाँ अब भी सामने हैं। समीक्षात्मक दृष्टि से कहा जा सकता है कि अजमेर की धरोहरें अभी भी **सुरक्षित और असुरक्षित स्थिति के बीच** खड़ी हैं।

निष्कर्ष और सुझाव

निष्कर्ष

अजमेर जिला राजस्थान की सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक पहचान का प्रतीक है। यहाँ के किले, दरगाह, मस्जिदें, मंदिर, हवेलियाँ और औपनिवेशिक धरोहरें न केवल अतीत की गाथा सुनाती हैं बल्कि वर्तमान और भविष्य को भी प्रेरित करती हैं।

पिछले एक दशक (2015–2025) में स्थानीय सरकार, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI), नगर निगम, राज्य पर्यटन विभाग और सामाजिक संगठनों ने मिलकर धरोहर संरक्षण की दिशा में ठोस प्रयास किए।

- सरकारी **स्तर पर** स्मार्ट सिटी मिशन, HRIDAY योजना और पर्यटन विकास परियोजनाओं ने धरोहरों को नई पहचान दी।
- सामाजिक **स्तर पर** NGOs, धार्मिक ट्रस्ट, शैक्षणिक संस्थान और युवाओं ने जन-जागरूकता बढ़ाने और सफाई अभियान चलाने में योगदान दिया।
- प्रमुख **उपलब्धियाँ** रही हैं – दरगाह क्षेत्र का सुधार, आनासागर झील का सौंदर्यीकरण, अकबर के किले का नवीनीकरण और हेरिटेज वॉक की शुरुआत।

लेकिन, इसके साथ-साथ चुनौतियाँ भी स्पष्ट हैं:

- अतिक्रमण और अवैध निर्माण
- पर्यावरणीय क्षति और प्रदूषण
- वित्तीय संसाधनों की कमी
- नागरिकों की उपेक्षा और असंगठित सामाजिक प्रयास

इस प्रकार, अजमेर की धरोहर संरक्षण की यात्रा अभी अधूरी है।

सुझाव

1. **समेकित नीति की आवश्यकता**
   - धरोहर संरक्षण को शहरी विकास, पर्यटन और पर्यावरण संरक्षण से जोड़ने वाली समेकित नीति बनाई जानी चाहिए।
2. **सामाजिक सहभागिता को संस्थागत रूप देना**
   - NGOs, धार्मिक संस्थाओं और शैक्षणिक संस्थानों को औपचारिक रूप से योजनाओं में भागीदार बनाया जाए।
3. **स्थानीय युवाओं और नागरिकों को जोड़ना**
   - युवाओं के लिए "हेरिटेज क्लब" और नागरिकों के लिए "धरोहर मित्र" जैसी पहलें चलाई जाएँ।
4. **डिजिटल संरक्षण और प्रचार**

- सभी प्रमुख धरोहरों का डिजिटल डॉक्यूमेंटेशन और वर्चुअल टूर विकसित किए जाएँ।

5. **वित्तीय संसाधनों का विस्तार**

- CSR (कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी) और PPP (पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप) मॉडल का अधिक प्रभावी उपयोग किया जाए।

6. **ग्रामीण और उपेक्षित धरोहरों पर ध्यान**

- केवल शहरी और प्रमुख धरोहरों ही नहीं, बल्कि गाँवों में स्थित मंदिरों, हवेलियों और छोटे स्मारकों पर भी ध्यान दिया जाए।

अंतिम टिप्पणी

अजमेर की धरोहरें केवल पत्थर और ईंटों का ढाँचा नहीं हैं, बल्कि वे इतिहास, संस्कृति और सामुदायिक पहचान की जीवंत धरोहर हैं। संरक्षण का कार्य तभी सफल होगा जब सरकार और समाज दोनों इसे साझा जिम्मेदारी के रूप में स्वीकार करेंगे।

संदर्भ सूची (References / ग्रंथ सूची)

1. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI), Protected Monuments List - Rajasthan, नई दिल्ली।
2. राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC), वार्षिक रिपोर्ट 2015-2025, जयपुर।
3. भारत सरकार, स्मार्ट सिटी मिशन: अजमेर प्रस्ताव एवं प्रगति रिपोर्ट (2016-2024), शहरी विकास मंत्रालय।
4. भारत सरकार, HRIDAY योजना दस्तावेज़ (2015-2019), संस्कृति मंत्रालय।
5. राजस्थान सरकार, बजट भाषण 2025-26, जयपुर।
6. राजस्थान राज्य संग्रहालय, अकबर का किला और संग्रहालय - संरचना एवं नवीनीकरण योजना, अजमेर।
7. देवनानी, वासुदेव (2025). राजस्थान विधानसभा कार्यवाही रिपोर्ट - अजमेर संग्रहालय जीर्णोद्धार, जयपुर।
8. "अजमेर शरीफ दरगाह: यात्री सुविधाएँ और सुरक्षा सुधार," राजस्थान पत्रिका, मई 2025।
9. "तारागढ़ किले का इतिहास और संरक्षण चुनौतियाँ," दैनिक भास्कर, जून 2024।
10. "HRIDAY योजना के अंतर्गत अजमेर और पुष्कर विकास कार्य," हिंदुस्तान टाइम्स, 2019।

11. शर्मा, ओ.पी. (2020). राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर, जयपुर: राजस्थानी प्रकाशन।
12. खान, नसीरुद्दीन (2018). Sufi Traditions and Ajmer Sharif, दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
13. सिंह, मीना (2022). Tourism and Heritage Conservation in Rajasthan, नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स।
14. "अजमेर स्मार्ट सिटी के अंतर्गत हेरिटेज वॉक की शुरुआत," द इंडियन एक्सप्रेस, अप्रैल 2021।
15. UNESCO, World Heritage Sites in India - Tentative List: Ajmer-Pushkar Region, पेरिस।